

## माजुली मुखौटे, पांडुलपि और नरसापुर क्रोशिया लेस शलिप को मलि GI टैग का दर्जा

### प्रलिमिंस के लयि:

माजुली मुखौटा, माजुली पांडुलपि चतिरकारी, क्रोशिया लेस शलिप, [भौगोलिक संकेतक](#)

### मेन्स के लयि:

बौद्धिक संपदा अधिकार, पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण

[स्रोत: द हट्टि](#)

आंध्र प्रदेश के नरसापुर के पारंपरिक क्रोशिया लेस शलिप को चीन के मशीन-नरिमति लेस उत्पादों से संरक्षण प्रदान करते हुए अपनी वशिषिट पहचान बनाए रखने के लयि [भौगोलिक संकेतक](#) का दर्जा प्रदान कयि गया ।

- इसी प्रकार सांस्कृतिक महत्त्व का संवर्द्धन और संरक्षण प्रदान करते हुए असम के माजुली मुखौटे तथा पांडुलपि चतिरकारी को GI का दर्जा प्रदान कयि गया ।
- इन GI टैग का उद्देश्य पारंपरिक शलिप को पुनर्जीवति करना और उनका संवर्द्धन करना है जसिसे उनकी कालजयी वरिसत का संरक्षण सुनश्चिति होता है ।

नरसापुर क्रोशिया लेस शलिप से संबंधति मुख्य वशिषिताएँ क्या हैं?



#### ■ नरसापुर क्रोशिया लेस शलिप:

- क्रोशिया लेस शलिप की शुरुआत वर्ष 1844 में हुई और इसे कई बाधाओं जैसे भारतीय अकाल (1899) तथा महामंदी (1929), का सामना करना पड़ा। 1900 के दशक के प्रारंभ में गोदावरी क्षेत्र में 2,000 से अधिक महिलाएँ लेस शलिपकला में शामिल थीं जो इसकी सांस्कृतिक महत्त्व को उजागर करता है।
- इस शलिप में विभिन्न आकार की क्रोशिया सलाई का उपयोग कर पतले सूती धागों के माध्यम से जटिल कलाकृतियाँ बनाई जाती हैं।
  - इस शलिप के कारीगर लूप और इंटरलॉकिंग टाँके बनाने के लिये एकल क्रोशिया हुक का उपयोग करते हैं जिससे उत्कृष्ट लेस पैटर्न बनते हैं।
- नरसापुर का हस्त निर्मित क्रोशिया उद्योग लेस से निर्मित उत्पादों की एक विविध शृंखला का उत्पादन करता है जिनमें वस्त्र, घरेलू सामान और सहायक उपकरण जैसे डोयली, तकिया का कवर, कुशन का कवर, बेडस्प्रेड, टेबल-रनर, टेबल क्लॉथ, हैंड पर्स, कैप, टॉप, स्टोल, लैपशेड तथा दीवार पर सजाई जाने वाली वस्तुएँ इत्यादि शामिल हैं।
- यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस जैसे देशों में नरसापुर के क्रोशिया लेस उत्पादों के निर्यात के साथ ये उत्पाद वैश्विक बाजारों में अपनी जगह बना रहे हैं।

#### ■ भौगोलिक संकेतक (GI) टैग:

- वाणजिय एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन उद्योग संवर्द्धन और आंतरिक व्यापार विभाग ने संबद्ध शलिप को भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री (GIR) में पंजीकृत किया तथा यह प्रामाणिकता किया कि यह शलिप भौगोलिक रूप से गोदावरी क्षेत्र पश्चिम गोदावरी तथा डॉ. बी.आर.अंबेडकर कोनसीमा के 19 मंडलों तक सीमित है।
  - पश्चिम गोदावरी जिले में नरसापुर और पलाकोले लेस उत्पादों के प्रमुख व्यापार केंद्र हैं जबकि कोनसीमा क्षेत्र में रजोल तथा अमलापुरम इस शलिप के प्रमुख केंद्र हैं।

#### ■ नरसापुर के कारीगरों के समुख चुनौतियाँ:

- कोविड-19 महामारी के बाद से शलिप बाजार स्थिर रहा है जिसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की मांग प्रभावित हुई है और उत्पादन में कमी आई है।
- हालाँकि इस शलिप में 15,000 से अधिक महिलाएँ शामिल हैं कति लगभग 200 ही नियमित उत्पादन में सक्रिय रूप से शामिल हैं।
- चीन के मशीन-निर्मित लेस उत्पादों ने बाजार पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया है जिससे नरसापुर लेस उत्पादों की मांग के लिये एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है।

## माजुली मुखौटे और माजुली पांडुलपिपेंटिंग क्या हैं?

#### ■ माजुली मुखौटा:

- माजुली मुखौटे पारंपरिक तकनीकों पर आधारित हाथ द्वारा बारीकी से तैयार किये गए मुखौटे हैं।
- हस्तनिर्मित इन मुखौटों का प्रयोग परंपरागत रूप से भाओना (धार्मिक संदेशों के साथ मनोरंजन का एक पारंपरिक रूप) या नव-वैष्णव

परंपरा के तहत भक्तिसंदेशों के साथ नाटकीय प्रदर्शन में पात्रों को चित्रित करने के लिये किया जाता है, जो 15वीं-16वीं शताब्दी के सुधारक संत श्रीमंत शंकरदेव द्वारा शुरू की गई थी।

- मुखौटों में देवी-देवताओं, राक्षसों, जीव-जंतुओं और पक्षियों को चित्रित किया जा सकता है जिनमें रावण, गरुड़, नरसमिहा, हनुमान, वराह, शूरपनखा इत्यादि शामिल होते हैं।
- बाँस, मटिटी, गोबर, कपड़ा, कपास और लकड़ी सहित विभिन्न सामग्रियों से बने मुखौटे का आकार सरिफ चेहरे को ढकने से लेकर कलाकार के पूरे सरि तथा शरीर को ढकने तक होता है।
- पारंपरिक दस्तकार समसामयिक संदर्भों को अपनाने के लिये सात्रा (मठ) की सीमाओं से परे जाकर माजुली मुखौटा निर्माण का आधुनिकीकरण कर रहे हैं।
  - सत्रों की स्थापना श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्यों द्वारा धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक सुधार के केंद्र के रूप में की गई थी।
  - माजुली, अपने 22 सत्रों के साथ, इन सांस्कृतिक प्रथाओं का केंद्र है। मुखौटा बनाने की परंपरा मुख्य रूप से चार सत्रों समागुरी सत्र, नतुन समागुरी सत्र, बहिमिपुर सत्र और अलेंगी नरसमिहा सत्र में पाई जाती है।



#### ■ माजुली पांडुलिपिपेंटिंग:

- पाल कला बौद्ध कला की शैली को संदर्भित करती है जो पूर्वी भारत के पाल साम्राज्य (8वीं-12वीं शताब्दी) में विकसित हुई थी। इसकी विशेषता इसके जीवंत रंग, वसित्तु कार्य और धार्मिक विषयों पर जोर है।
- माजुली की पांडुलिपिपेंटिंग धार्मिक कला का एक रूप है जो पूजा पर केंद्रित द्वीप की वैष्णव संस्कृति से निकटता से जुड़ी हुई है।
- इस कला के सबसे शुरुआती उदाहरणों में से एक का श्रेय श्रीमंत शंकरदेव को दिया जाता है, जो असमिया में भागवत पुराण के आद्य दशम को दर्शाते हैं। माजुली के हर सत्र में इसका अभ्यास जारी है।
- माजुली पांडुलिपिपेंटिंग पाला स्कूल ऑफ पेंटिंग कला से प्रेरित है।

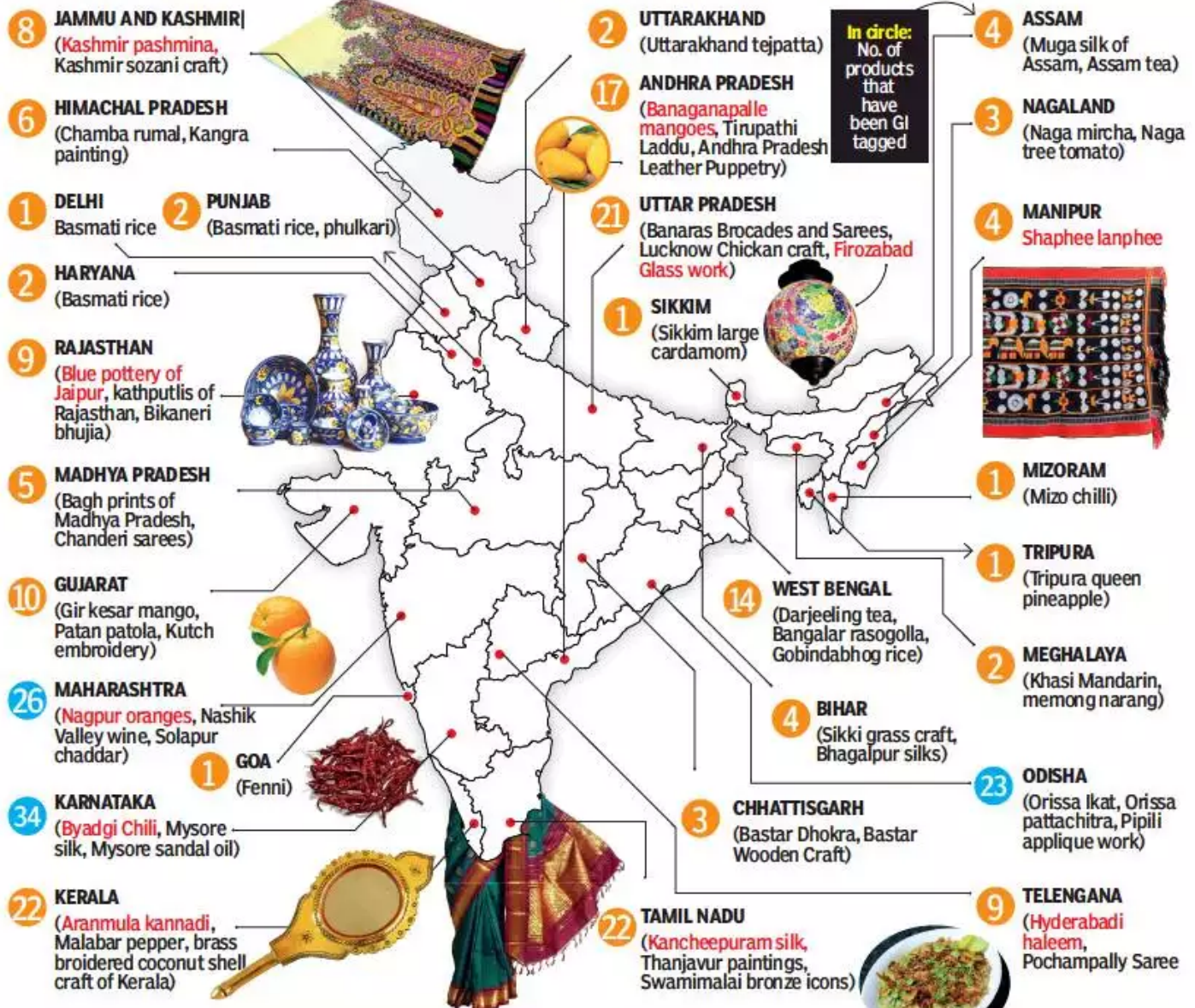


वस्योइननिनिवृ  
स्वसकयविष्णु  
यस्येवायसुहृ  
ववरांधयवसुह  
विष्णुविवसुधा  
ष्णुविवसुधागन  
मेवसुहृनेष्णु



# JOINED BY BORDERS, DIVIDED BY CULTURES

Having got GI tags for 34 products, Karnataka has the most number of registrations, followed by Maharashtra (26) and Odisha (23)



## WHAT IS A GI TAG?

- > A GI tag is a geographical indication of an item which is specific to a particular place
- > GI status can be sought for agricultural products, handicrafts, handloom and food products
- > The RGI (registration of geographical indications) logo given to a particular product can

only be used by registered and authorised users

- > When marketed, a GI tagged product must carry a logo showing its place of origin
- > Civil and criminal proceedings can be initiated against those using the logo in unauthorised manner

## HOW TO APPLY?

- > An association or collective body can apply to GI Registry
- > Application should be backed by proof of uniqueness, historical records to show proof of origin, quality and special character
- > After rounds of verification, presentation and meetings, if registry is satisfied, application goes to GI Registry journal
- > If application receives no opposition within four months, it gets the GI tag



और पढ़ें: [भारत का भौगोलिक संकेतक परदृश्य, 17 से अधिक उत्पादों के लिये GI टैग](#)

**UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न**

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति में से कसि 'भौगोलकि संकेतक' का दरजा प्रदान कयि गया है? (2015)

1. बनारस के जरी वस्त्र एवं साड़ी
2. राजस्थानी दाल-बाटी-चूरमा
3. तरिपतलिङ्गू

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (c)

प्रश्न. भारत ने वस्तुओं के भौगोलकि संकेतक (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 को कसिके दायित्वों का पालन करने के लयि अधिनियमति कयि? (2018)

- (a) अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन
- (b) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष
- (c) व्यापार एवं वकिस पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन
- (d) वशिव व्यापार संगठन

उत्तर: (d)

**??/??/??/??:**

प्रश्न. भैषजकि कंपनयिों के द्वारा आयुर्वजिज्ञान के पारंपरकि ज्ञान को पेटेंट कराने से भारत सरकार कसि प्रकार रक्षा कर रही है? (2019)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/gi-tag-to-majuli-masks,-manuscript-and-narasapur-crochet-lace-craft>